वार्षिक सदस्यता शुल्क - रु. २५/-

AUGUST - 2024

स्वानुभूतिप्रकाश

प्रकाशक :
श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट
भावनगर - ३६४ ००१.

ज्ञानवैभवधारी सातिशय श्रुतज्ञानके धनी भावि तीर्थाधिनाथ की भेंट करानेवाले चैतन्यरत्न प्रशममूर्ति धन्यावतार पूज्य बहिनश्री चंपाबहिन को उनके १११वें मंगलकारी जन्मजयंती प्रसंग पर शत शत वंदन !!

बहिनश्री के बोलने पर थोड़ा विचार चल गया। उनके परिचय बाद, कि बहुत थोड़ा बोले हैं। बहुत कम बोलते हैं, परंतु बोलते हैं वह संक्षेपमें बोलते हैं। अतः क्या होता है कि वे अपने विचार लंबे-लंबे नहीं कहते। वे विचारोंका टोटल बता देते। इसलिए उन्हें समझना हो तो उनके टोटलके पीछे उनकी वैचारिक भूमिका कितनी गहरी और विशाल है वह समझना पड़े। और फिर उनकी सही महत्ता आए, उनकी महिमा आए। ऐसी उनकी बोलनेकी पद्धति थी।

–पूज्य भाईश्री शशीभाई

स्वानुभूतिप्रकाश

वीर संवत्-२५५०, अंक-३२०, वर्ष-२६, अगस्त-२०२४

'धन्य अवतार' प्रशममूर्ति भगवतीमाता प्रति पूज्य गुरुदेवश्रीके प्रमोदपूर्ण हृदयोद्गारो!!

अरे! यह जीव (बहिनश्री चंपाबेन) तो कोई अलौकिक है! अधिक बोलती नहीं इसलिये कुछ नहीं है ऐसा नहीं है। यह तो गंभीर द्रव्य है!

इनका पुरुषार्थ तो इतनी प्रबलतासे उछल रहा है कि यदि वह पुरुष होतीं तो कबकी मुनिदीक्षा लेकर वनजंगलमें चली जातीं, यहाँ दिखती भी नहीं; क्या करें, स्त्रीका शरीर है!

...जिस प्रकार मालामें मनकोंका मेर होता है उसी प्रकार यह तो समस्त मंडलकी-मनकोंकी मेर है! इन्हींसे मंडलकी शोभा है। इनसे तो सब नीचे, नीचे और नीचे ही हैं।

*

२८ वर्ष हो चुके हैं जातिस्मरण हुए, परन्तु बाहर आनेकी जरा-सी भी जिन्हें (बहिनश्री चंपाबेनको) वृत्ति नहीं उठती - प्रतिबिम्ब जैसी स्थिर हो गई हैं। जिन्हें स्वयंको सागरोपम वर्षोंका ज्ञान है फिर भी गुप्त! मुझसे भी नहीं कहा। मेरी सब बातें कह जायें, परन्तु अपनी नहीं।....इनका आत्मा कितना गंभीर! अलौकिक! अचिन्त्य! अद्भूत!-शब्द कम पड़ते हैं! यह तो सागर समान गंभीर हैं।

*

बहिनको (चंपाबेनको) तो चार भवका ज्ञान (जातिस्मरण) है। असंख्य अरबों वर्षका ज्ञान है इन्हें। यह तो कोई अलौकिक आत्मा है। चंपाबेनकी शक्ति तो गजब है। नरम नरम नरम हैं। स्त्री-शरीर है परन्तु कहीं स्त्री शरीर थोड़ा ही बाधक होता है? ३४ वर्ष हो

गये हैं उन्हें ज्ञान प्रगट हुए। स्त्रियोंमें धर्मरतन हैं।

*

बहिन (बहिनश्री चंपाबेन) तो आराधनाकी देवी हैं। पवित्रतामें सारे भारतमें अजोड़ हैं। उनकी छत्रछाया सारे सोनगढ़में है। ओहो ! बहिन तो भगवतीस्वरूप हैं। तुझे और कहाँ ढूँढ़ने जाना है? उनके दर्शन कर न! एक बार भावसे जो उनके दर्शन करेगा उसके अनन्त कर्मबंधन ढीले हो जाएँगे। उनके चरणोंसे जो लिपटा रहेगा उसे भले ही सम्यग्दर्शन न हो, तत्त्वका अभ्यास न हो, तो भी उसका बेड़ा पार है।

*

सुवर्णपुरीकी यह रचना (सीमंधरभगवान, कुन्दकुन्दाचार्यदेव इत्यादिकी प्रतिष्ठा) उनके विदेहके जातिस्मरणका चित्रण है।

*

चंपाबेन तो इस कालका आश्चर्य हैं।

*

आज बहिनका जन्मदिन है न !.... सबको कितना उल्लास दिखायी देता है; उन्हें कुछ है? अध्यात्ममें उनकी स्थिति उदास, उदास एवं स्थिर है।

*

बहिन (चंपाबेन) की निर्मलता बहुत-बहुत ! निर्मलता-निर्मलता ! अपूर्व-अपूर्व स्मरण ! शांत एवं गंभीर ! बहिन तो धर्मरतन हैं । महाविदेहमें बहुत निर्मलता थी; वहाँकी निर्मलता लेकर यहाँ आयी हैं। एकान्तप्रिय, शान्तिसे अकेली बैठकर पुरुषार्थ करती रहती हैं। उन्हें कहाँ किसीकी पड़ी ही है ! कुटुम्बकी भी नहीं पड़ी! अन्तर स्वरूप-परिणतिमें रहती हैं।

*

ओहो! बहिनके ज्ञानकी निर्मलताकी क्या बात कहें! बहुत स्पष्ट ज्ञान!....बहिन तो जबरदस्त आराधना करती हैं। अकेली बैठी अपना काम करती ही रहती हैं।....अब तो उन्हें बाहर लाना ही है। उनका जयजयकार होगा, उनकी बड़ी शानदार उन्नति होगी, जो जियेंगे वे देखेंगे। अलौकिक द्रव्य है, उनकी लाईन ही ओर है।

*

बहिन बोलती तो बहुत कम हैं। लड़कियों-के बहुत भाग्य हैं। यदि मौन रहें तब भी उनके दर्शनसे तो लाभ ही है।....हमें बहुत समयसे ख्याल था कि बहिन कि बहुत शक्ति है।

*

श्री कुन्दकुन्द-आचार्यदेव विदेहमें गये थे उसके कौन साक्षी हैं? साक्षी यह चंपाबेन बैठी हैं ये हैं।

*

बहिनकी गंभीरता तो देखो! बहिनके बोल (वचनामृत) बहुत गंभीर हैं। बहिनको तो कहां बाहर आना है? बहुत उत्तम हुआ कि बहिनकी यह पुस्तक बाहर आई। बहिनकी पुस्तक तो बहुत सरस! बहुत ही सरस! जिसे अध्यात्मकी रुचि हो उसके लिये तो बहुत ही अच्छी है। ऐसी पुस्तक कब बाहर आती! बहिनका तो विचार नहीं था और बाहर आ गई। जगतके भाग्य हैं!

*

बहिनका आत्मा तो मंगलमय है, धर्म-रतन है। हिन्दुस्तानमें बहिन जैसी अजोड़ स्त्रियोंमें कोई है

नहीं, अजोड़ रत्न है। स्त्रियोंके तो महाभाग्य हैं जो ऐसा रत्न मिला है।

*

(बहिनश्रीको आते देखकर कहा-) बहिनके लिये जगह करो, 'धर्मकी शोभा' चली आ रही है। बहिन न तो स्त्री हैं, न पुरुष, वे तो स्वरूपमें हैं। भगवतीस्वरूप एक चंपाबेन ही हैं, उनकी दशा अलौकिक है। वे तो अतीन्द्रिय आनन्दमें मौज कर रही हैं।

*

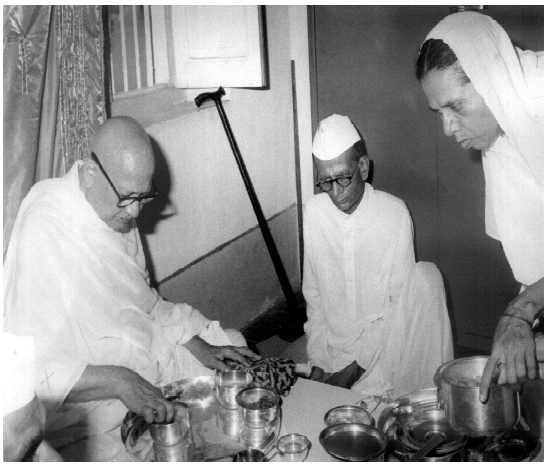

यह तो बहिनके अन्तरके वचन हैं न! बहिनकी भाषा सादी, किन्तु अंतरकी है। अनुभव विद्वत्ता नहीं चाहता, अंतरकी अनुभूति एवं रुचि चाहता है। यह जो बहिनके शब्द हैं वे भगवानके शब्द हैं। भाषा भी नयी और भाव भी नये! सादी भाषामें अन्दर रहस्य है। लाखों पुस्तकें छप चुकी हैं, मैंने कभी कहा नहीं था; जब यह (वचनामृत) पुस्तक हाथमें आयी (देखी-पढ़ी) तब रामजीभाईसे कहा - भाई! यह पुस्तक एक लाख छपाओ।

*

(बहिनश्रीके वचनामृत) पुस्तक समय पर बाहर आई। बहिनको कहाँ बाहर आना ही है, किन्तु पुस्तकने बाहर ला दिया। भाषा सरल है किन्तु भाव बहुत गंभीर हैं। मैंने पूरी पुस्तक पढ़ ली है। एक बार नहीं किन्तु पच्चीस बार पढ़ ले फिर भी सन्तोष न हो ऐसी पुस्तक है। यह दस हजार पुस्तकें छपवाकर सब हिन्दी-गुजराती 'आत्मधर्म' के ग्राहकोंको भेंट दी जाएँ ऐसा मुझे लगा।

*

परिणमनमेंसे निकले हुए शब्द हैं। बहिनको तो निवृत्ति बहुत। निवृत्तिमेंसे आये हुए शब्द हैं। पुस्तकमें तो समयसारका सार आ गया है - अनुभवका सार है; परम सत्य है। 'वचनामृत' वस्तु तो ऐसी बाहर आ गई है कि इसे हिन्दुस्तानमें सब जगह प्रगट करना चाहिये।

*

यह बहिनके वचन हैं वे अनंत ज्ञानियोंके वचन हैं। इन्द्रोंके समक्ष इस समय श्री सीमंधरदेव जो कह रहे हैं वही यह वाणी है। यह पुस्तक साधारण नहीं है, इसमें तो बहुत कुछ भरा है। भाषा मीठी है, सादी है; भाव गहरे और गंभीर हैं। दिव्यध्वनिका यह आवाज है। अरे! एक बार मध्यस्थरूपसे इसे पढ़े तो सही! भगवानकी कही हुई जो ॐकार ध्वनि है उसमेंसे निकला हुआ यह सार बहिनने कहा है।

*

इस कालका योग अनुकूल है; बहिन जैसोंका इस काल अवतार है। अरे! धर्मात्मा गृहस्थसे भेंट होना भी अनंत कालमें कठिन है। भाइयोंको इस काल धर्मात्मा पुरुष मिल जायें, परन्तु इस कालमें बहिनोंके भी सद्भाग्य हैं।

*

बहिनसे बोला गया अन्तरमेंसे। वहाँसे (विदेहक्षेत्रसे) आयी हुई बात है। बहिन वहाँसे आयी हैं।....बहिन (लड़कियोंके सामने) बोलीं और लिखा गया, नहीं तो बाहर आता ही कहाँसे? (यह सब)

खोदना है पत्थरमें (संगमरमरके पटियोंमें)।

*

यह बहिनके वचन हैं। अंतर आनन्दके अनुभवमेंसे आयी हुई बात है। बहुत जोर है अंतरका, अप्रतिहत भावना। आत्माका सम्यग्दर्शन और अतीन्द्रिय आनन्दकी अनुभूति - उसमेंसे यह बात आयी है। आनन्दके स्वादमें मुरदेकी भाँति चलती हैं। अहाहा! सच्चिदानन्द प्रभु हैं बहिन! अंतरकी महत्ताके सामने बाहरका कुछ लक्ष ही नहीं है। अनुभवी, सम्यक्त्वी, आत्मज्ञानी हैं। आत्माका अनुभव तो है परन्तु साथ ही असंख्य अरब वर्षोंका जातिस्मरणज्ञान है। परन्तु लोगोंको बैठना कठिन पड़े।

*

बहिन (चंपाबेन) तो जैनकी मीरांबाई हैं।....भान सहितकी भक्ति है, अंधी दौड़ नहीं है।

*

वचनामृतके एक-एक बोलमें, एक-एक शब्दमें निधान भरे हैं। जिसे तल पकड़ना आता हो उसे अगाधता लगे स्वभावकी। पर्यायने प्रभुका संग्रहण किया, पूरा ज्ञानमें ले लिया। यह तो सिद्धान्तका दोहन है। जगतके भाग्य कि यह (बहिनकी पुस्तक) समय पर बाहर आ गई। थोड़े शब्दोंमें, सादी भाषामें, मूल तत्त्वको प्रगट किया।

*

बहिन तो महाविदेहसे आयी हैं। उनके अनुभवकी यह (वचनामृत) वाणी है। हीरोंसे सन्मान किया तब भी उन्हें कुछ नहीं। बहिन तो (थोड़े भवमें) केवलज्ञानी होंगी।

*

बहिनको खबर नहीं कि कोई लिख लेगा। उन्हें बाह्य प्रसिद्धिका जरा भी भाव नहीं। धर्मरतन हैं, भगवती हैं, भगवतीस्वरूप माता हैं। (उनके यह वचन) आनन्दमेंसे निकले हैं। भाषा मीठी आ गयी है।

*

बहिन अभी तक गुप्त थीं। अब ढँका नहीं रहेगा-छिपा नहीं रहेगा। उनके वचन तो भगवानकी वाणी है, उनके घरका कुछ नहीं है-दिव्यध्वनि है। बहिन तो महाविदेहसे आयी हैं। यह वचनामृत लोग पढेंगे, मनन करेंगे, तब ख्याल आयगा कि यह पुस्तक कैसी है! अकेला मक्खन है।

*

(बहिनकी) यह वाणी तो आत्माके अनुभवमें-आनन्दमें रहते-रहते आ गयी है। हम भगवानके पास पूर्वभवमें थे। बहुत ऊँची बात है। इस समय यह बात और कहीं नहीं है। बहिन (चंपाबेन) तो संसारसे भर गयी हैं। अपूर्व बात है बापू!

*

बहिनकी पुस्तक तो ऐसी बाहर आ गई है कि मेरे हिसाबसे तो सबको भेंट देना चाहिये। बहुत सादी-बालक जैसी भाषा; संस्कृत भाषा नहीं। बहुत जोरदार गंभीर बातें उसमें हैं।

*

बहिनकी पुस्तकमें बहुत संक्षिप्त और माल-माल है। अन्यमतियोंको भी पसन्द आये ऐसा है।....अरे! उसमें तो तेरी महिमा और बड़ाईकी बातें हैं। मुनियोंकी कैसी बात ली है!-'मुनियोंको बाहर

आना वह बोझ लगता है।' यह पुस्तक बाहर आई सो बहुत ही अच्छा हुआ। अंदर थोड़ेमें बहुत सी बातें हैं।

*

बहिन तो एक अद्‌भुत रतन पैदा-हुई हैं। शक्ति अद्‌भुत है। अतीन्द्रिय आनन्दके वेदनमें उन्हें (बाहरकी) कुछ पड़ी ही नहीं। हिन्दुस्तानमें उनके जैसा कोई आत्मा नहीं है। यह पुस्तक बाहर आई इसलिये कुछ खबर पड़ती है।

*

चंपाबेन अर्थात् कौन?! उनका अनुभव, उनका ज्ञान, समता अलौकिक है।....स्त्रीकी देह आ गई है। परन्तु अंतरमें अतीन्द्रिय आनन्दकी मौजमें पड़ी हैं; उसमेंसे वाणी निकली है।-यह, उनकी वाणीका प्रमाणपना है।

*

बहिन अलौकिक वस्तु हैं; देहेसे भिन्न और रागसे भिन्न आत्माका अनुभव कर रही हैं। उन्हें (बाह्यमें) कहीं मजा नहीं आता, वे तो अतीन्द्रिय आनन्दमें मौज करती हैं।

*

बहिनके वचनामृत यह तो केवलज्ञानकी बारह-खड़ी है। दो-चार बार नहीं किन्तु दस बार पढ़े तब समझमें आये।

*

बहिनकी (चंपाबेनकी) तो क्या बात करूँ। उनकी निर्मल द्रष्टि और निर्विकल्प स्वात्मानुभूति इस कालमें अजोड हैं। वे तो अंतरसे ही उदास-उदास हैं। उनके सम्बन्धमें विशेष क्या कहूँ? मेरे मन तो वे भारतका धर्मरतन, जगदम्बा, चैतन्यरत्न, धर्ममूर्ति हैं, हिन्दुस्तानका चमकता सितारा हैं।

*

बहिनको असंख्य अरबों वर्षका ज्ञान है-९ भवका ज्ञान है (-४ भूतके, ४ भविष्यके)। बहिन तो भगवानके पाससे आयी हैं। अनुभवमेंसे यह बात आयी है। उदयभावसे तो मर गई हैं, आनन्दसे जी रही हैं। परमात्माके पाससे आयी हैं। साक्षात् परमात्मा तीन लोकके नाथ सीमंधरभगवान बिराजते हैं वहाँ हम साथ थे। क्या कहें प्रभु! सीमंधर परमात्माके पास कई बार जाते थे। उन भगवानकी यह वाणी है। बहिन तो आनन्दसागरमें....

*

यह (वचनामृत) पुस्तक ऐसी आयी है कि चाहे जितने शास्त्र हों, इसमें एक भी बात बाकी नहीं है। थोड़े शब्दोंमें द्रव्य-गुण-पर्याय, व्यवहार-निश्चय आदि सब आ गया है। जगतके भाग्य कि ऐसी सादी भाषामें पुस्तक बाहर आ गई। वीतरागताके भावका रटन और घोटन है। सारे हिन्दुस्तानमें ढिंढोरा पिटेगा। ज्यों ही पुस्तक हाथमें आयी त्यों ही कहा कि एक लाख पुस्तकें छपना चाहिये।

*

यह कथा-कहानी नहीं, भागवत कथा है। परमात्माकी वाणीके इशारे हैं। उनका अनुभव करे उसे खबर पड़े। ...बहिन तो भगवती माता हैं।

*

('धन्य अवतार' में से साभार)

आवश्यक सूचना

स्वानुभूतिप्रकाश मासिक पत्रिका समयपर प्राप्ति हेतु जिन लोगोंको (e-copy) - pdf. की अगर आवश्यकता हो तो वे अपना रजिस्ट्रेशन करवाने हेतु निम्न नंबर पर संपर्क करे।
श्री नीरव वोरा - ९८२५०५२९१३

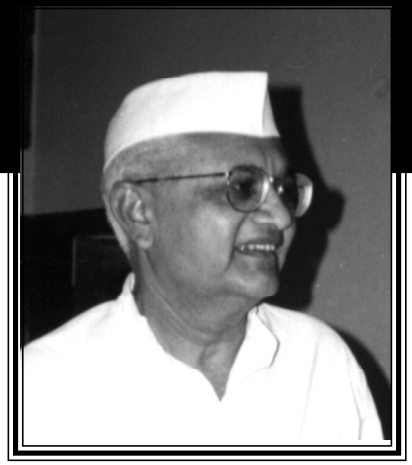

दृढ़ संकल्पी, कृतनिश्चयी पू. बहिनश्री चंपाबहिनका गुण संकीर्तन

(पू. भाईश्री शशीभाईके प्रवचनका अंश)

पू.बहिनश्री स्वयं दिखनेमें शांत थे। कभी किसीसे ऊँची आवाज़में बात की हो ऐसा नहीं देखा गया। high toneसे कभी किसीके साथ बात की हो ऐसा किसीने नहीं देखा होगा। इतनी शांत प्रकृति थी। प्रकृतिगतरूपसे उनकी प्रकृति शांत थी, किन्तु विचार एवं निश्चयमें अद्भुत दृढ़ता थी। किसीके सामने ढीला नहीं छोड़ते थे। किसीको अंदाज तक आना मुश्किल था कि, इतने शांत होनेपर भी इतने दृढ़तावान होंगे। जैसे लगे ऐसा कि नरम होंगे। यह बहुत mark किया है। बहुत दृढ़ता, जबरदस्त दृढ़ता, अद्भुत दृढ़तावान थे। जिसके फलस्वरूप खुद अपना कार्य कर सके हैं।

निश्चय कर लिया कि, 'आत्महित कर ही लेना है', फिर संसार नहीं चाहिए मतलब नहीं चाहिए। इस बाबतमें किसीके आगे न डीगे। ऐसी दृढ़ता कि किसीसे भी नहीं डिगे। ऐसा नहीं कि, अब आपकी शादी हो चुकी है अब नहीं चलेगा। अरे! शादी हो गई तो हो गई इससे क्या हुआ? मुझे तो केवल आत्मकार्य ही करना है बस! कोई दबाव नहीं डाला गया होगा क्या? वे सब बातें तो बाहर आई नहीं क्योंकि कुटुंबकी बातें कुटुंबसे बाहर नहीं जाती। हालाँकि दबाव तो आता ही है, सब संसारीजीव टाँग खींचेंगे ही खींचेंगे। कोई भी जीव जब संसारसे छूटना चाहता है तब इनके करीबी टाँग तो खींचेंगे ही खींचेंगे। क्योंकि खुदने ही पूर्वमें ऐसे उदयभावमें परिणमन किया है, अतः उसका उदय तो वैसा ही आयेगा न! दूसरा कहाँसे आये? सानुकूल उदयकी आप अपेक्षा भी रखते हो तो वह आपकी नासमझ है। यानी उदय तो ऐसा ही आयेगा। यह बहुत स्वाभाविक है। किन्तु वे बहुत दृढ़तावान थें।

सूर्यकीर्ति भगवानकी स्थापनाके वक्त सारा हिन्दुस्तान विरोधमें था। केवल मुझे पूछ लिया था कि, मुझे बीचमें लाये बिना आपकी हिंमत और भावनाको भलीभाँति देख लेना। चाहे जैसी परिस्थितिमें भी विचलित नहीं होनेका दृढ़ विश्वास हो तो ही इस कार्यको करनेका संकल्प करना। विरोध होगा, जबरदस्त विरोध होगा। जयपुरवाले विरोध जगायेंगे। सब पहलेसे बताया था हमको। पीछे जैसा-जैसा उन्होंने कहा था ठीक वैसा ही हुआ था। वहींसे विरोध शुरू हुआ। सारे हिन्दुस्तानमें उनलोगोंने विरोध जगाया। सारा दिगम्बर समाज विरोधमें आ गया। ऐसी-ऐसी अफवायें आती थी कि, दस हज़ार लोग विरोध करने हेतु ट्रक भर-भरके सोनगढ़की ओर आ रहें हैं। दोसौ लोग निकल चुके हैं। हमारा बाल भी न हिले इतना शौर्य था। बिलकुल भय नहीं। तनिक-सा भय नहीं। कुछ नहीं! आने दो, जो होगा देखा जायेगा। जिसको भी आना हो, सामने आ जाने दो। ऐसी दृढ़ता व

संकल्प पहले से था। (पूज्य बहिनश्रीने) भले ही ऐसा कहा था कि, मुझे कहीं बीचमें मत लाना किन्तु उन्होंने पूरा-पूरा साथ दिया है।

ये साहु श्रेयांसप्रसाद इत्यादि लोगोंका एक डेलीगेशन आया था। सारे हिन्दुस्तानके मुख्य-मुख्य लोगोंका - नौ जनको लेकर आये थे। एक-एक प्रांतसे एक-एक जनको लेकर, हिन्दुस्तानके विभिन्न प्रांतसे बड़े-बड़े मुखियाको लेकर आये थे। उन्होंने गंभीरतासे एक चेतावनी भी दे दी कि, यदि आप लोग नहीं मानेंगे तो आपको बहुत मुश्किलोंका सामना करना पड़ेगा। व्यापारी आदमी, बड़ा आदमी था इसलिये हलकी या गंदी भाषाका प्रयोग नहीं करके गंभीरतासे डरावनी भाषामें बोल दिया कि, अगर आप लोग नहीं मानेंगे तो आपको बहुत परेशानी झेलनी पड़ेगी। (पूज्य बहिनश्रीने) कोई उत्तर नहीं दिया परन्तु अपनी दृढ़तामें कोई फर्क नहीं! पू. बहिनश्रीने कोई उत्तर नहीं दिया। और सचमें ऐसा हुआ भी। उनके ऊपर इन्दौरसे वारंट भी आया। अरे! चाहे कुछ भी आ जाये न! कोई भय नहीं। किसीको भय नहीं। बहुत ही उल्लासपूर्वक पूरी प्रतिष्ठा हुई, लोगोंमें उत्साह और जोश बहुत था, तो सब धामधूमसे संपन्न हो गया।

उस प्रतिष्ठामें अन्य कोई प्रतिष्ठामें नहीं हुआ इतना योगदान करीब ५५ लाख रुपये आये थे। समाजमें समर्पण बहुत अच्छा था। लोगोंमें उत्साह भी बहुत था और सारा प्रसंग बहुत अच्छेसे हेन्डल किया था। कितनी ही कठिनाइयाँ, कोर्टके चक्कर काफी कुछ आया किन्तु इनकी दृढ़तामें कोई फ़र्क नहीं। और तो और दीर्घदृष्टि भी बहुत थीं। कोर्टकी स्थितिको देखकर मैंने बात की थी कि, यदि प्रशस्तिमें 'सूर्यकीर्ति' नाम लिखना हो तो अब आपत्ति नहीं है। तब उन्होंने मना किया। यह बात अंतरसे नक्की हो चुकी है कि, कुछ ऐसी परिस्थिति खड़ी होवे तो नाम नहीं लिखना है। तो वैसी परिस्थिति हो चुकी है अब नाम नहीं लिखना है। हमने कहा कि, लेकिन हमलोग केस जीत जायेंगे ऐसा है। तो कह दिया, जीत भी जाये तो भी नाम नहीं लिखना है। जो एकबार खुदने निश्चय कर लिया फिर इसमें कोई बदलाव नहीं करते। भीतरसे जो निश्चय हो गया फिर वह फाईनल मतलब फाईनल।

हमारे पक्षवाले कहते हैं इसलिये ऐसा कर ले और प्रतिपक्षवाले कहते हैं, इसलिये वैसा कर ले ऐसा बिलकुल नहीं। यथार्थ निश्चय अंतरसे आ गया, बात पूरी हो गई। और उसमें भी उनकी बहुत दीर्घदृष्टि थी यह बात आज प्रतीत हो रही है क्योंकि सबकी आयु सीमित है। पाँच-पचीस साल बाद सबकी अनुपस्थिति हो जायेगी तब क्या? तत्पश्चात् भी परिस्थिति बिगड़े नहीं इस हेतुरूप उनकी दीर्घदृष्टि थी। उन्होंने यह बात स्पष्ट कर दी थी कि, इतना ही लिखनेका है, इसके अतिरिक्त कुछ नहीं लिखना है। 'महाविदेह क्षेत्रके, घातुकी खंडके भावि तीर्थंकर' बस! नाम नहीं। 'सूर्यकीर्ति' नाम नहीं लिखना है। इसतरह बहुत गहन विचारयुक्त उनका काम था, दीर्घदृष्टियुक्त कार्य रहता था।

(प्रवचनांश -'स्वानुभूतिदर्शन' दिनांक १९-०२-९९, प्रश्न - ४४५, प्रवचन क्र.- ३८६, ३३ मिनट पर)

ज्ञानियोंकी निष्कारण करुणारूप प्रसादी 'अमूल्य अध्यात्म विद्या'

हिन्दुस्तानमें भी मूल चीज़ यह विद्याका मूल मंत्र जैनके अलावा और जगह नहीं है। और जैनमें भी संप्रदायमें यह चीज़ नहीं रही। विकृति आ गई। जो कुछ है वह कुछ एक ज्ञानियों के पास है। जो मूल तीर्थंकरकी दी हुई विद्या है - अध्यात्म विद्या। कहनेका मतलब वह है कि यह मौका है हमारे पास। इस विद्याकी उपलब्धि होवे, प्राप्ति होवे ऐसा मौका है। अगर हमें सभी प्रकारसे दुःखसे छूटना हो तो। यह बात पहले होनी चाहिए कि हमको बिलकुल दुःखी होना ही नही है। हमेशा के लिए सुखी होना है। पर्मानेंन्ट सुख चाहिए, अल्पकालके लिए नहीं चाहिए। और पूरा-पूरा चाहिये ऐसा जिसका अभिप्राय हो, ऐसी जिसकी अभिलाषा हो, उनके लिए यह चीज़ है।

'ऐसा महिमावंत...' ऐसा वैल्यूएबल। महिमावंत माने क्या? ऐसी कीमती चीज़ हमारी आत्मा है कि जिसमें अनंत सुख भरा है, अनंत ज्ञान भरा है। हमारे जिनेन्द्र परमात्मा अनंत परमानंदसे विराजमान हैं। कितना उनको आनंद है? अनंत परम वो आनंद है। और वह कहते हैं कि तुम हमारे जैसे बन सकते हो अगर तुम चाहते हो तो। बात तो कितनी है? तुम्हारी चाहत चाहिऐ और कुछ नहीं चाहिए। कोई फ़ीस नहीं है यहाँ। बाकी तो सबसे कोई बढ़िया से बढ़िया चार्ज करते हैं तो कंसल्टेशन करनेवाले कन्सलटेंट लोग करते हैं। देखिये आप। सबसे बड़ा चार्ज किसका होता है? यह इकनामिस्ट होते हैं न? हमारे हिन्दुस्तानमें नानी पालखीवाला ऐसे हैं बड़े-बड़े। सब मिनटोंका चार्ज लगता है। हज़ारों रुपये लेते हैं मिनटोंके।

जबकि हमारे श्रीगुरु होते हैं, जिनेन्द्र होते हैं, ज्ञानी होते हैं। कोई चार्ज नहीं लेते। कंसल्टेशन पूरा कराते हैं। कितना, पूरा सुखी होनेके लिए। सभी दुःखको खत्म करनेके लिए। कोई चार्ज नहीं। ऐसे निष्कारण करुणाशील वे होते हैं। जगतके दुःखी प्राणियोंको देख करके उनको करुणा आती है। और फ्री औफ चार्ज वे अपने उपदेशको बाँटते हैं। इसी सिद्धांतको ले करके हमारा periodical चलता है। जो **'स्वानुभूतिप्रकाश'** चलता है, कई लोग कहते हैं कि आप फ्री क्यों देते हैं? कुछ तो चार्ज रखिए। कुछ तो चार्ज रखिए। कि नहीं, हमारे सिद्धांतमें वह बात नहीं है। चार्ज लेने की बात हमारे सिद्धांतमें नहीं है। ज्ञानका पैसा कोई लेता है वह ज्ञान नहीं होता। अगर कोई ज्ञानका पैसा लेता है तो वह ज्ञान होता ही नहीं। वह सही ज्ञान नहीं होता

है। यह तो बिज़नेस हो गया, व्यापार हो गया तो, दुकानदारी हो गई। यह दुकानदारीका विषय नहीं है। इसी सिद्धांतको लेकरके हमने ट्रस्टकी वह पालिसी बनाई। कि, ज्ञान दान तो फ्री। फ्री होगा। पुस्तक की कीमत रखतें हैं लेकिन ९० परसेंट फ्री जाता है अपना। वीतराग ट्रस्टमें अभी तक दो लाख किताबें छप गई। कितनी? करीब-करीब फ्री गई हैं। दो लाख किताबोंके रुपये तो ज्यादा होते हैं। करीब-करीब फ्री गई हैं। अभी भी फ्री जाती हैं। बहुत जाती हैं। क्योंकि उसका मूल्य क्या किया जाये? जो सभी प्रकारके दुःखसे छुड़ाए और अनंत सुखकी प्राप्ति कराए, बेहद सुखकी प्राप्ति कराए उसका मूल्य क्या हो सकता है? उसका कोई टर्म नहीं है। मूल्य करनेका कोई टर्म नहीं है। यह तो भौतिक पदार्थमें लेने-देनेकी टर्मिनोलॉजी है। यह तो अमूल्य चीज़ है, उसका कोई मूल्य नहीं हो सकता।

संसारमें टेन्शनकी कौनसी दवाई है बताओ? है कोई? और टेन्शन फ्री कौन-सा मनुष्य है वह बताओ? एक भी आदमी बता दो जो टैन्शन फ्री हो। इतनी बड़ी समस्या है कि पूरे अरबों मनुष्य टेन्शनमें हैं और इसका कोई इलाज नहीं है। यह इलाज इधर है। इसकी कीमत कितनी की जाय? और वह इलाज भी फ्री औफ चार्ज मिलता है। लेकिन प्रयोग खुदको करना पड़ता है। ऐसे चार्ज नहीं लेते, लेकिन (वैसे) सब कुछ ले लेते हैं। क्या? अपनत्व छोड़ो, शरीर मेरा नहीं, यह शरीर पर मेरा अधिकार नहीं, कुटुम्ब मेरा नहीं। संपत्ति मेरी नहीं। कोई चीज़ मेरी नहीं। मैं एक आत्मा हूँ। यह मेरापन छोड़ना यह सबसे बड़ा चार्ज है।

*

(प्रवचनांश...श्री 'स्वानुभूतिदर्शन' दिनांक १०-११-९८, प्रश्न - ४००, प्रवचन क्र.- ३४२, ३५ मिनट पर)

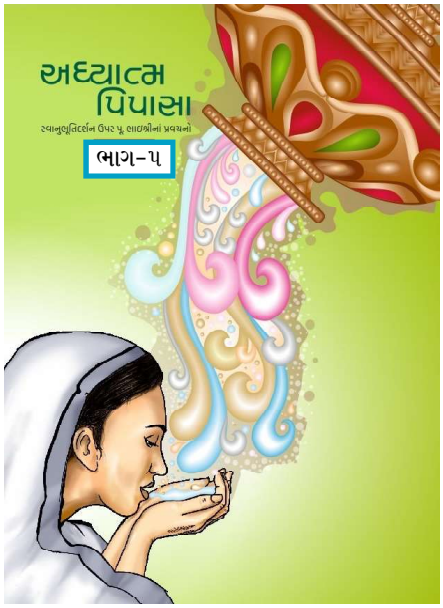

नया प्रकाशन (सिर्फ गुजराती भाषामें)
'अध्यात्म पिपासा' (भाग-५)

प्रशममूर्ति धन्यावतार पूज्य बहिनश्रीकी तत्त्वचर्चाका ग्रंथ 'स्वानुभूतिदर्शन' पर अध्यात्मयोगी पूज्य भाईश्री शशीभाईके प्रवचनोंकी श्रृंखला 'अध्यात्म पिपासा' भाग-५ (केवल गुजरातीमें) पूज्य भाईश्री की ९२ वीं जन्म जयंतिके अवसर पर दि : ०८-१२-२४ को प्रकाशित किया जायेगा। जो मुमुक्षु गुजराती भाषासे परिचित हो और इसके स्वाध्यायके लिये इच्छुक हो वे अपनी प्रत दि : ३०-१०-२४ तक रजिस्टर करवा लें।

- श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट

श्री नीरव वोरा ९८२५०५२९१३

'श्री जिनेन्द्र दर्शन'

-पूज्य भाईश्री शशीभाई

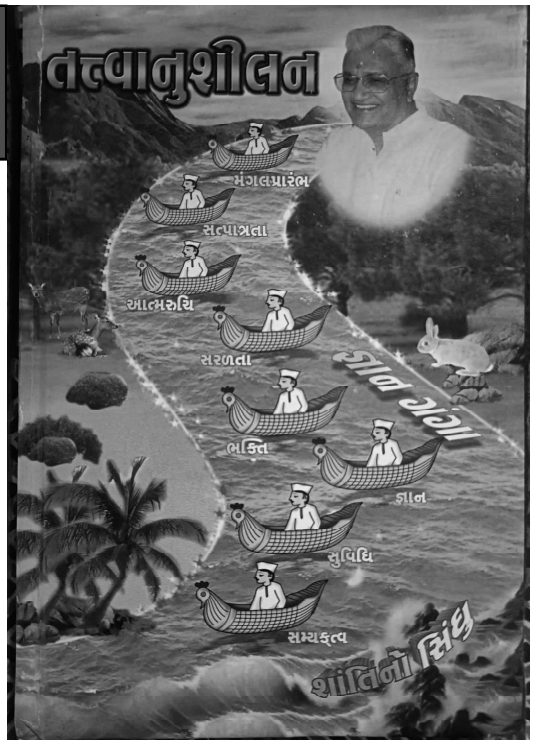

श्री जिनप्रतिमायें तीनों लोकों में अकृत्रिमरूप से अनादि से बिराजमान हैं। इसके पीछे कुदरत का हेतु, संसारीजीव को निजात्मदर्शन करवाना है। ऐसी कुदरत की अनूठी व्यवस्था है! इसी हेतु से मोक्षमार्गी धर्मात्मा, श्री जिनेन्द्रदेव की प्रतिकृतिरूप प्रतिमा बनवाकर उनकी श्री जिनमंदिर में विधिपूर्वक स्थापना करते हैं। धर्मात्माओं के द्वारा यह परंपरा भी अनादि से मोक्षमार्ग में प्रचलित है।

आत्मज्ञान हेतु वाणी द्वारा आत्मस्वरूप दर्शाने में आता है। एतदर्थ आत्मज्ञानी पुरुषों के द्वारा विरचित सर्व ग्रंथों में आत्मबोध का निरूपण करने में आया है, किया जाता है। परन्तु 'आत्मा' एक अरूपी पदार्थ है और उसका स्वरूप वचनातीत ही नहीं अपितु विकल्पातीत भी होने से उसे मात्र संकेतरूप से वाणी द्वारा दर्शाया जा सकता है। वास्तव में तो आत्मस्वरूप सिर्फ श्रवण-चिंतन का विषय नहीं है अपितु वह तो मात्र वेदन- अनुभवज्ञान- का विषय है। अतएव ऐसे आत्मस्वरूप के दिग्दर्शन हेतु श्री जिनप्रतिमा की स्थापना एक सर्वोत्तम प्रयोग है।

यह तथ्य तो सर्वमान्य है कि किसी भी विषय को कथन के द्वारा समझाने के बजाय यदि उसे प्रयोग के द्वारा समझाने में आये तो वह भलीभाँति समझाया जा सकता है, समझा जा सकता है। और यह बात सर्व साधारण के व्यावहारिक जीवन में अनुभवगोचर है। विशेषकर विज्ञान के विषय में तो यह आम प्रचलित कार्यपद्धति है। कारण कि वैज्ञानिक विषय को केवल व्याख्या और पुस्तकों के माध्यम से समझाया जाना अशक्य है। उल्लेखनीय यह है कि भौतिकविज्ञान तो इंद्रियज्ञानगोचर स्थूल विषय होने पर भी उसे समझाने हेतु जब प्रयोगपद्धति अनिवार्य है तब आत्मज्ञान तो सूक्ष्मातिसूक्ष्म और इंद्रियातीत 'आत्मस्वभाव' का विज्ञान है जिसे कि समझने/समझाने हेतु प्रयोगात्मकपद्धति के सिवा अन्य साधन की कल्पना निरर्थक ही है। अतः ऐसे आत्मस्वरूप को दर्शाने हेतु पूर्ण आत्मस्वरूपपरिणत साक्षात् परमात्मा या उनकी प्रतिकृति के दर्शन यानी कि श्री जिनेन्द्रदर्शन ही एक मात्र कार्यकारी प्रयोगात्मक पद्धति है। और इसी पद्धति की सिद्धि के द्वारा ही आत्मसिद्धि संप्राप्त होती है।

यद्यपि वर्तमान में जैनसंप्रदाय में श्री जिनेन्द्रदर्शन करने की रुढि तो अवश्य प्रचलित है तथापि उपर्युक्त पारमार्थिक महत्व से प्रायः अनभिज्ञ होने से उक्त प्रयोगात्मकपद्धतिपूर्वक भावात्मक दर्शन करने का या इस पद्धति के अभ्यास का भी अभाव दिखाई देता है जो एक शोचनीय विषय है।

आत्मस्वभाव एकांत शुद्ध, प्रत्यक्ष अनुभूतिस्वरूप है यानी कि आत्मा का स्वरूप ही अनंत स्वसंवेदनमय है। जो कि तेरहवें गुणस्थान में श्री अर्हंत जिनेश्वरदेव को पूर्ण प्रगट होता है। प्रत्येक आत्मा, ऐसा अनंत स्वसंवेदन अपने निजात्मस्वभावमें से प्रगट कर सके वह स्वाभाविक

है। अतएव यदि यथार्थ प्रकार से श्री जिनेन्द्रदर्शन करने में आये तो, दर्शन करनेवाले के अपने विद्यमान स्वसंवेदनरूप ज्ञानवेदन के आविर्भाव हेतु श्री जिन प्रतिमा सर्वोपरी निमित्त है।

'वेदना' स्वयं एक ऐसा दृश्य है जो कि दर्शक को वेदना में सहज ले जाता है। उदाहरण के रूप में जब किसी प्राणी को तीव्र असातावेदनीय से पीडित देखने में आये तो देखनेवाले को असाता का अंश उत्पन्न हो आता है और उसके प्रति स्वाभाविक करुणा की उत्पत्ति हो आती है। ऐसा जीव का सहज स्वभाव है। ऐसी वैभाविक परिस्थिति सभी के अनुभवगोचर है। तब फिर प्रगट अनंत स्वसंवेदनमयी जिनमुद्रित जिनप्रतिमाजी के दर्शन करनेवाले के स्वसंवेदन का आविर्भाव होना वह एक सहज स्थिति है। अतः अति सुगमता से स्वसंवेदन के आविर्भाव हेतु यदि तथारूप यथार्थ दृष्टिकोण (-प्रयोगात्मकपद्धति) को साधने में आये तो वह अत्यंत उपकारी सिद्ध होए, ऐसा है।

उसी प्रकार श्री जिनमुद्रा में अनंत शांति का वेदन भी प्रसिद्ध है जो बगैर बोले ही आत्मशांति को दर्शाती है। इसीलिये ओघसंज्ञा से भी जिन दर्शन करनेपर दर्शक को मानसिक शांति मिले बिना नहीं रहती। तो फिर जो ज्ञानीपुरुष आत्मशांति के ज्ञाता हैं उन्हें तो अनंत सुधामय शांतिस्वरूप श्री जिनमुद्रा के दर्शन करने पर, उनका स्वयंभू परिणमन शांतस्वभाव में विशेषरूप से ढल जाये उसमें भाल आश्चर्य क्या है?! अतएव श्री जिनप्रतिमा की स्थापना, जिन्हें आत्मस्वभाव का ज्ञान नहीं उन्हे आत्मज्ञान का तथा आत्मज्ञानीपुरुषों को वह आत्मध्यान का कारण है।

यद्यपि तत्त्वज्ञान का अभ्यास करनेवाले जीवों को अनेक स्तर से अध्यात्म का विषय बुद्धिगम्य होता है। उससे उन्हें यह भी स्पष्ट समझने में आता है कि 'अंतर्मुख होने से ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप अंतर्मुखी परिणाम से वीतरागी धर्म समुत्पन्न होता है।' तिस पर भी 'अंतर्मुख किस प्रकार होना' उसकी यथार्थ विधि, उन्हें अपने से प्राप्त हो नहीं पाती तथा ऐसी ही कोई वस्तुस्थिति होने के कारण उनके लिये वह एक समस्या बन पड़ती है। तब ऐसे में यदि किसी के द्वारा 'अंतर्मुख होने का प्रयोग' दर्शाने में आये तो वह उनके लिये कितना उपकारी सिद्ध हो??

'अंतर्मुख होना' यह एक सर्वोत्कृष्ट गूढ रहस्य है तथा 'अंतर्मुख होने की कला' अध्यात्मविद्या का एक रहस्यमय प्रकरण है।

श्री जिनमुद्रा का निरीक्षण करके उसके दर्शन करनेवाले को वह प्रगटरूप से निरवशेष अंतर्मुर्खता दर्शाती है। सर्वथा अतंर्मुख दशा के दर्शन करनेवाले के लिये 'अंतर्मुख होने की विधि-' को समझने का यह एक अनूठा प्रयोग है।

अतः अंतर्मुख होने की अनादि की समस्या को, अत्यंत सरलता व सुगमता से, हल करने के लिये श्री जिनप्रतीमा की अत्यंत महिमापूर्वक स्थापना करने की प्रणालिका है। जिसमें उक्त महत्त्वपूर्ण पारमार्थिक हेतु सन्निहित है। अतएव किसी भी प्रकारका छल पकड़कर जिनप्रतिमा की स्थापना का निषेध करने योग्य नहीं है।

स्व. पूज्य पंडित श्री दीपचंदजी कासलीवाल 'अनुभवप्रकाश' के 'देव अधिकार' में लिखते हैं कि 'क्योंकि देव से परम मंगलरूप निजानुभव प्राप्त करते हैं, इसलिए देव उपकारी हैं।' अतएव उनकी पूज्यता है। 'जिनस्थापना से सालम्बध्यान द्वारा निरालम्बपद प्राप्त करता है।' इसीभाँति श्री'योगसार' में भी कहा है कि 'जिन समरो, जिन चिंतवो, जिन ध्यावो मन शुद्धः ते ध्यातां क्षण एकमां, लहो परमपद शुद्ध' १९.

तात्पर्य यह है कि स्वसंवेदनरूप वीतरागमुद्रा को देखकर स्वसंवेदनभावरूप अपने स्वरूप को अवलोकन में लेवे। तब फिर उसमें एकाग्रता द्वारा दर्शक भव्यों के अनंत तेजोमय निजस्वरूप का प्रकाशन होता है। आत्मस्वभाव में जो अनंत सहज प्रत्यक्षता का तेज सामर्थ्यरूप से भार हुआ है जिसकी अभिव्यक्तिरूप केवलज्ञान की अनंत प्रत्यक्षता श्री जिनमुद्रा में प्रसिद्ध है।

उल्लेखनीय है कि परोक्षज्ञान में उक्त प्रत्यक्षता का विचार करने से या आत्मस्वरूप के प्रतिपादक ग्रंथों के पठन द्वारा या अन्य किसी प्रक्रिया से उसका यथावस्थितरूप

से आविर्भाव होना असंभव है। क्योंकि उक्त सभी प्रक्रियाओं में परोक्षज्ञान की ही प्रवृत्ति है और अनादि से जीव परोक्षज्ञान से परिचित है व ज्ञान की प्रत्यक्षता से अनभिज्ञ है ऐसे में इस अज्ञात विषय का ज्ञान श्री जिनमुद्रा द्वारा होता है।

इस भाँति श्री जिनबिंब, संसार में जीव के उपजे हुए मोहरूपी प्रचंड दावानल को शांत करने के लिए मेघवृष्टि के समान है। तथा अनादि घोर अज्ञान-तिमिर के नाश हेतु सूर्य के प्रबल प्रकाश सदृश है। अतः ज्ञानियों का फरमान है कि वीतरागमूर्ति की उपासना अवश्य ही करने योग्य है।

इस विषय में पूज्य श्री दीपचंदजी लिखते हैं कि 'इस स्थापना के निमित्त से तीन काल, तीन लोक में भव्यजीव धर्म साधते हैं, इससे स्थापना परम पूज्य है। द्रव्यजिन द्रव्यजीव (है) वह भी भावपूज्य है। इससे भावीनय से पूज्य है।'

अंत में उक्त प्रकार से जिनेन्द्रदर्शन की विधि को संप्राप्त करके दर्शन करनेपर स्वसंवेदनभाव, आत्मशांति का वेदन, अंतर्मुखता और ज्ञान की प्रत्यक्षता प्रयोगात्मकपद्धति से समझ में आती है। अतः ऐसे प्रकार से दर्शन करना योग्य है जिससे कि निजानुभव प्राप्त हो। वास्तव में जिनदर्शन निजदर्शन है। श्री जिनेन्द्र के दर्शन करने पर भावजिन द्वारा वैसा ही अपना स्वरूप ज्ञान में आविर्भाव होता है।... इति ॐ शांति

('तत्वानुशीलन' में से साभार उद्धृत)

(पृष्ठ संख्या १६ से आगे..)

और क्या जाननेसे वह टूटे?' ऐसा दूसरा प्रश्न वहाँ शिष्यको होना संभव है और उस बंधनको वीरस्वामीने किस प्रकारसे कहा है? ऐसे वाक्यसे उस प्रश्नको रखा है; अर्थात् शिष्यके प्रश्नमें उस वाक्यको रखकर ग्रंथकार यों कहते हैं कि आत्मस्वरूप श्री वीरस्वामीका कहा हुआ तुम्हें कहेंगे क्योंकि आत्मस्वरूप पुरुष आत्मस्वरूपके लिये अत्यंत प्रतीति योग्य है। उसके बाद गंथकार उस बंधनका स्वरूप कहते हैं वह पुनः पुनः विचार करने योग्य है। तत्पश्चात् इसका विशेष विचार करनेपर ग्रंथकारको स्मृति हो आयी कि यह समाधिमार्ग आत्माके निश्चयके बिना घटित नहीं होता, और जगतवासी जीवोंने अज्ञानी उपदेशकोंसे जीवका स्वरूप अन्यथा जानकर, कल्याणका स्वरूप अन्यथा जानकर, अन्यथाका यथार्थतासे निश्चय किया है; उस निश्चयका भंग हुए बिना, उस निश्चयमें संदेह हुए बिना, जिस समाधिमार्गका हमने अनुभव किया है वह उन्हें किसी प्रकारसे सुनानेसे कैसे फलीभूत होगा? ऐसा जानकर ग्रथकार कहते हैं कि 'ऐसे मार्गका त्याग करके कोई एक श्रमण ब्राह्मण अज्ञानतासे, बिना विचारे अन्यथा प्रकारसे मार्ग कहता है', ऐसा कहते थे। उस अन्यथा प्रकारके पश्चात् ग्रंथकार निवेदन करते हैं कि कोई पंचमहाभूतका ही अस्तित्व मानते हैं, और उससे आत्माका उत्पन्न होना मानते हैं, जो घटित नहीं होता। ऐसे बताकर आत्माकी नित्यताका प्रतिपादन करते हैं। यदि जीवने अपनी नित्यताको नहीं जाना तो फिर निर्वाणका प्रयत्न किसलिये होगा? ऐसा अभिप्राय बताकर नित्यता दिखलायी है। उसके बाद भिन्न-भिन्न प्रकारसे कल्पित अभिप्राय प्रदर्शित करके यथार्थ अभिप्रायका बोध देकर, यथार्थ मार्गके बिना छूटकारा नहीं है, गर्भस्थिति दूर नहीं होता, जन्म दूर नहीं होता, मरण दूर नहीं होता, दुःख दूर नहीं होता, आधि, व्याधि और उपाधि कुछ भी दूर नहीं होते और हम ऊपर जो कह आये हैं ऐसे सभी मतवादी ऐसे ही विषयोंमें संलग्न हैं कि जिससे जन्म, जरा, मरण आदि का नाश नहीं होता, ऐसा विशेष उपदेशरूप आग्रह करके प्रथम अध्ययन समाप्त किया है। तत्पश्चात् अनुक्रमसे इससे बढ़ते हुए परिणामसे उपशम-कल्याण-आत्मार्थका उपदेश दिया है। उसे ध्यानमें रखकर अध्ययन व श्रवण करना योग्य है। कुलधर्मके लिये 'सूत्रकृतांग'का अध्ययन, श्रवण निष्फल है।

प्रशममूर्ति पूज्य बहिनश्री द्वारा लिखित भक्तिमय पत्र (बहिनश्री की साधना और वाणी)

परम उपकारी, भरतक्षेत्र में अपूर्व श्रुतधारा बरसानेवाले, मंगलमूर्ति गुरुदेव को परम भक्ति से नमस्कार।

श्री कहानगुरुदेव के पावनकारी आहारदान के प्रसंग, एवं उसी तरह पूज्य गुरुदेव के साथ तीर्थयात्रा के अवसर, श्री जिनेन्द्र प्रतिमाओं के कल्याणक अवसर आदि पुनीत प्रसंग, वे सब पुण्योदय से बनते हैं, उन प्रसंगो को याद करते हुए उल्लास आता है।

श्री गुरुदेव के अन्तर में प्रकटे हुए, जाज्वल्यमान श्रुतज्ञानसूर्य द्वारा अनुपम रहस्य झरती अमृतवाणी निरन्तर सुनने का अपूर्वयोग प्राप्त हुआ है, वह महाभाग्य है।

गुरुदेव की निरन्तर वाणी, उनके आहारदान आदि के पावन प्रसंग जो पंचम काल में मिले हैं, वे अहोभाग्य है।

अनन्त काल के परिभ्रमण का दुःख और विभावों का दुःख, सर्व परभावों के भेदभावों से भिन्न, शुद्धात्मतत्त्व को दिखानेवाली, गुरुदेव की वाणी से सहज टलता है।

पूज्य गुरुदेव ने शुद्धात्मतत्त्व को प्रकट करने का मार्ग बताकर, पंचम काल में अनेक जीवों के दुःख टाले हैं, सुखधाम, आनन्दधाम, आत्मा को प्रकट करने का मार्ग सुगम किया है।

परम परम उपकारी गुरुदेव के चरणकमलों में परम भक्ति से बारम्बार नमस्कार।

*

सोनगढ़, वि.सं. २००३
(ई.स. १९४७)

...!

अपूर्व मार्ग प्रकाशक, कृपालु गुरुदेव के चरणकमल में परम भक्तिसह बारम्बार नमस्कार!

द्रव्यजीवन और भावजीवन के आधार, अपूर्व, सर्वस्व उपकारी, परम-कृपालु, अद्भुत गुरुदेव सुख-शान्ति में विराजते हैं। शारीरिक प्रकृति अच्छी है।

अब तो विभाव के सभी विकल्पों से छूटकर, वीतराग-पर्यायरूप परिणमन होगा, तब धन्यता होगी! हजारों मुनियों के वृन्द जिस काल में विचरण करते होंगे, वह प्रसंग धन्य है! ऐसे काल में मुनित्व को लेकर घड़ी में (अल्प समय में) अप्रमत्त, घड़ी में (अल्प समय में) प्रमत्त - ऐसी दशा को साधकर, वीतरागी पर्यायरूप परिणमेंगे, तब धन्य होंगे। अभी भी जैसे बने वैसे पुरुषार्थ बढ़ाकर, निर्मल पर्याय को विशेष-विशेष प्रकट करना, वही श्रेयरूप है।

लि.
निरन्तर श्री देव-गुरु-शास्त्र की सेवा
इच्छनेवाली बहिन चम्पा के यथायोग्य...
- श्री वीतरागभाव को नमस्कार

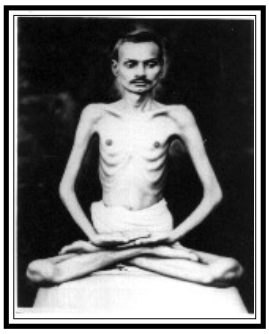

परम कृपालुदेव श्रीमद् राजचंद्रजी द्वारा लिखित आध्यात्मिक पत्र

पत्रांक ३७५

बंबई, वैशाख, १९४८

जिनागम उपशमस्वरूप है। उपशमस्वरूप पुरुषोंने उपशमके लिये उसका प्ररूपण किया है, उपदेश किया है। यह उपशम आत्माके लिये है, अन्य किसी प्रयोजनके लिये नहीं है। आत्मार्थमें यदि उसका आराधन नहीं किया गया, तो उस जिनागमका श्रवण एवं अध्ययन निष्फलरूप है; यह बात हमें तो निःसंदेह यथार्थ लगती है।

दुःखकी निवृत्तिको सभी जीव चाहते हैं, और दुःखकी निवृत्ति, जिनसे दुःख उत्पन्न होता है ऐसे राग, द्वेष और अज्ञान आदि दोषोंकी निवृत्ति हुए बिना, होना संभव नहीं है। इन राग आदिकी निवृत्ति एक आत्मज्ञानके सिवाय दूसरे किसी प्रकारसे भूतकालमें हुई नहीं है, वर्तमानकालमें होती नहीं है, भविष्यकालमें हो नहीं सकती। ऐसा सर्व ज्ञानीपुरुषोंको भासित हुआ है। इसलिये वह आत्मज्ञान जीवके लिये प्रयोजनरूप है। उसका सर्वश्रेष्ठ उपाय सद्गुरुवचनका श्रवण करना या सत्शास्त्रका विचार करना है। जो कोई जीव दुःखकी निवृत्ति चाहता हो, जिसे दुःखसे सर्वथा मुक्ति पानी हो उसे इसी एक मार्गकी आराधना किये बिना अन्य दूसरा कोई उपाय नहीं है। इसलिये जीवको सर्व प्रकारके मतमतांतरसे, कुलधर्मसे, लोकसंज्ञारूप धर्मसे और ओधसंज्ञारूप धर्मसे उदासीन होकर एक आत्मविचार कर्तव्यरूप धर्मकी उपासना करना योग्य है।

एक बड़ी निश्चयकी बात तो मुमुक्षु जीवको यही करना योग्य है कि सत्संग जैसा कल्याणका कोई बलवान कारण नहीं है, और उस सत्संगमें निरंतर प्रतिसमय निवास चाहना, असत्संगका प्रतिक्षण विपरिणाम विचारना, यह श्रेयरूप है। बहुत बहुत करके यह बात अनुभवमें लाने जैसी है।

यथाप्रारब्ध स्थिति है इसलिये बलवान उपाधियोगमें विषमता नहीं आती। अत्यंत ऊब जानेपर भी उपशमका, समाधिका यथारूप रहना होता है; तथापि चित्तमें निरंतर सत्संगकी भावना रहा करती है। सत्संगका अत्यंत माहात्म्य पूर्व भवमें वेदन किया है, वह पुनः पुनः स्मृतिमें आता है और निरंतर अभंगरूपसे वह भावना स्फुरित रहा करती है।

जब तक इस उपाधियोगका उदय है तब तक समतासे उसका निर्वाह करना, ऐसा प्रारब्ध है; तथापि जो काल व्यतीत होता है वह उसके त्यागके भावमें प्रायः बीता करता है।

निवृत्तिके योग्य क्षेत्रमें चित्तस्थिरतासे अभी 'सूत्रकृतांगसूत्र' के श्रवण करनेकी इच्छा हो तो करनेमें बाधा नहीं है। मात्र जीवको उपशमके लिये वह करना योग्य है। किस मतकी विशेषता है; किस मतकी न्यूनता है; ऐसे अन्यार्थमें पड़नेके लिये वैसा करना योग्य नहीं है। उस 'सूत्रकृतांग' की रचना जिन पुरुषोंने की है, वे आत्मस्वरूप पुरुष थे, ऐसा हमारा निश्चय है।

'यह कर्मरूप क्लेश जो जीवको प्राप्त हुआ है, वह कैसे दूर हो?' ऐसा प्रश्न मुमुक्षु शिष्यके मनमें उत्पन्न करके 'बोध प्राप्त करनेसे दूर हो' ऐसा उस 'सूत्रकृतांग' का प्रथम वाक्य है। 'वह बंधन क्या?

(अनुसंधान पृष्ठ संख्या १४ पर..)

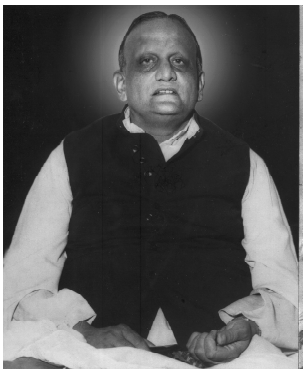

'द्रव्यदृष्टि प्रकाश'में से 'सम्यक्ज्ञानकी प्रवृत्ति' सम्बन्धित पूज्य श्री निहालचंद्रजी सोगानीजीके चयन किये गचे वचनामृत

सभी शास्त्रों का - बारह अंग का सार तो 'मैं' हूँ; शेष सब बातें तो जानने की हैं। 'अपने' को दृष्टि में ले लेने पर जो ज्ञान उघड़ता है वह सब जान लेता है। (३३६)

*

दृष्टि की बात को मुख्य रखकर सब खतौनी करनी चाहिए। इधर (अंतर में) दृष्टि होनेपर जो ज्ञान हुआ.... वह (ज्ञान) वस्तु को जैसी है वैसी ही जान लेता है। इस दृष्टि के बिना तो किसी बात में अधिक खिँच जाता है या किसी बात को ढ़ीला कर देता है। परंतु दृष्टि होने पर ज्ञान (मध्यस्थ हो जाता है, इसीलिए) जिसकी जितनी-जितनी मर्यादा है उसके अनुसार ही जानता है। (स्वरूपदृष्टि में सर्वस्वरूप से स्व स्वरूप की उपादेयता हो जाती है। और परिणमन का ऐसा वलण हो जाने से ज्ञान में अविवेक उत्पन्न नहीं होता जिससे ज्ञान अयथार्थरूप से हीनाधिक तूल नहीं देता। वैसी सम्यक् मर्यादापूर्वक ज्ञान की प्रवृत्ति रहती है।) (३३८)

*

जिसको अनुभूति हुई हो, वह जीव अनुभव के बल से कौनसी बात सत्य है? (और जो बात अनुभव से नहीं मिलती वो असत्य है - ऐसा) फ़ौरन् जान लेता है। (३४१)

*

इधर (अंतर) दृष्टि हुए बिना ज्ञान यथार्थ नहीं होता है। दृष्टि होने पर उत्पनन्न हुआ ज्ञान- अपना (पर में) कितना अटकाव है? अपनी स्वभाव में कितनी जमावट है? कितना रस है? - यह सब सहज जान लेता है। (३४२)

*

जिस अपेक्षा से वस्तु का जो स्वभाव है उस अपेक्षा से शत प्रतिशत वैसा ही एकांत स्वभाव है, वह स्वभाव अन्य अपेक्षा लगाने से ढीला नहीं हो सकता। (३५५)

*

त्रिकाली में एकत्व होनेपर राग ऐसा भिन्न दिखता है कि जैसे अन्य चीज़ प्रत्यक्ष भिन्न दिखाई देती है - राग इतना प्रत्यक्ष जुदा दिखता है। (३९१)

*

मुँह में पानी के साथ कचरा आते ही खदबदाहट होनेसे उसे मुँह से निकाल (फेंक) दिया जाता है। ऐसे ही राग का वेदन तो कचरा है, ज्ञानी उसको अपना नहीं मानते। ज्ञानी को किसी भी क्षण राग में अपनापन आता ही नहीं। (४४९)

*

(पृष्ठ संख्या-१९ से आगे..)

टीकामें थोड़ा अमृतचन्द्राचार्यने सत्संग (का विषय) लिया है और परिभ्रमणकी बात ली है। चौथी गाथा है उसमें, अन्यत्र कहीं नहीं है।

मुमुक्षु :- पात्रता न हो तो उलटा पड़े ऐसा है।

पूज्य भाईश्री :- हाँ, जरूर उलटा पड़े। वास्तवमें तो गुरुगमके बिना अथवा गुरु चरणके बिना इस ग्रंथका (समयसारका) स्वाध्याय मुमुक्षुको करना योग्य ही नहीं है। ज्ञानीके चरणमें बैठकर पढ़े तब तो ठीक है। वरना निरर्थक है। अपने आप, घरमें बैठकर कोई समयसार पढ़ने लगे कि चलो! अपने गुरुदेव भी समयसार पढ़ते थे इसलिए हम भी घर बैठकर स्वाध्याय करें - इसमें कोई दम नहीं है।

'बहिनश्रीके वचनामृत'में मुमुक्षु समाजके योग्य और वो भी वर्तमान मुमुक्षु समाजके योग्य बहुत-सी बातें हैं। और जब इसके उपर गुरुदेवकी नज़र पड़ी तब वे खुद बहुत ही प्रमोदभावमें थे। बहुत ही प्रमोदभावमें थे। यह तो हमलोगोंने प्रत्यक्ष देखा है। भावनगर आए तब शुरू करवाया था। गुरुदेव भावनगर पधारें तब कहा कि, बहिनश्रीके वचनामृत उपर प्रवचन कीजिये। यहींसे ही हम लोगोंने उस पर स्वाध्याय शुरू करवाया था। बहिनश्रीके वचनामृत पुस्तकका प्रकाशन भी हमने ही शुरू कराया है। तब व्यवस्था अपने हाथमें थी। प्रकाशनका मुद्दा भी बंबईकी दादर वाली मीटिंगमें उठाया था। और फिर ज़ोर देकर, विशेष आग्रहपूर्वक तैयार करवाया। प्रकाशनके समय भी बात निकली तो कहा तीन हज़ार नकल छपवानी है, तब पाँच हज़ार तो मुश्किलसे करवाई थी। फिर सीधे दस हज़ार छपवानी पड़ी और पाँच हज़ार मुश्किलसे करवाई तब हमने कहा था कि, ये पाँच हज़ारकी तो चटनी हो जाएगी, लेकिन बादमें पता ही नहीं चला फिर तो हज़ारों नकलें छपीं। यह तो कन्नड़में, तमिलमें, सभी भाषाओंमें है। हिन्दी, कन्नड़, तमिल। इसका यह कारण है।

*

(प्रवचनांश...श्री 'स्वानुभूतिदर्शन' दिनांक १९-०२-९९, प्रश्न - ४४५, प्रवचन क्र.- ३८६, १० मिनट पर)

आभार

'स्वानुभूतिप्रकाश' (अगस्त-२०२४, हिन्दी एवं गुजराती) के इस अंककी समर्पणराशि
१) श्रीमती कृपालीबहिन पियुषभाई भायाणी, कोलकाटा
और
२) मीनाक्षीबहिन विरागभाई शाह, भावनगरकी
ओर से ट्रस्टको साभार प्राप्त हुई है।
अतएव यह पाठकोंको आत्मकल्याण हेतु भेजा जा रहा है।

वर्तमान मुमुक्षुसमाजके अजोड मार्गद्रष्टा पू. बहिनश्री!!

(पू. भाईश्रीके प्रवचनका अंश)

बहिनश्रीकी नज़र बहुत सूक्ष्म थी। दूसरोंको समझानेमें भी बहुत सूक्ष्म। गणधरका जीव है न! गणधरका जीव है तभी तो भविष्यमें बारह अंग रचनेवाले हैं।

अभी जो श्रुतज्ञान प्रगट हुआ है और इस श्रुतज्ञानका ज़रा विशेष क्षयोपशम होगा, क्षयोपशम भाव है आखिर तकका। क्षायिकभाव तो केवलज्ञानमें होता है। पूरा क्षयोपशम होगा तब बारह अंगकी रचना करेंगे। परंतु उनकी क्वालिटी इस तरह की है। मैंने बहुत बारीकीसे मार्क किया है। उनके इस प्रकारके अनेक स्टेटमेंट मैंने देखे हैं कि वर्तमान समाजको वास्तवमें क्या जरूरत है वह उनके ज्ञानमें बहुत आया है। उनके साथ कोई भी मुमुक्षु प्रश्नोत्तर करे तो भी वे बहुत उपयोगपूर्वक जवाब देते थे। ऐसा नहीं कि, चाहे कुछ भी जवाब दे दें। मैंने तो मार्क किया है। उनकी हयातीमें यह मार्क किया है। (इसलिये) तभी विचार आया था कि वे गणधरके जीव हैं न इसलिए सामाजिक दृष्टिकोण भी उनका बहुत सुस्पष्ट है कि, वर्तमान समाज कहाँ भूल करता है। गुरुदेवके अनुयायी भी कहाँ भूल करते हैं, वह उनको बहुत स्पष्ट था।

इसलिए उनके वचनामृत छपे तब गुरुदेव फिदा हो गए। आफरीन हो गए। ओहोहो...! लाख पुस्तक छपवाओ। हमने आज तक (दूसरी) पुस्तकके लिए कुछ नहीं कहा। इस पुस्तकके लिए कहते हैं कि लाख छपवाओ! उनके गुरुकी पुस्तकके लिए नहीं बोले, परंतु उनके शिष्यकी पुस्तकके लिए बोले! लिजीए! समयसारके लिए नहीं बोले कि लाख समयसार छपवाओ। परंतु बहिनश्रीके वचनामृतके लिए बोले। कारण क्या? सामाजिक व्यू प्वाइंट इसके अंदर बहुत अच्छा है। समयसार आम समाजको लागू पड़े ऐसा ग्रन्थ नहीं है। समयसार - कोई उत्कृष्ट मुमुक्षु हो तो वह सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर ले ऐसा वह ग्रंथ जरूर है। बाकी जघन्य योग्यतावालेके काममें आए ऐसा नहीं है उसमें। क्योंकि भेदज्ञानकी चर्चा है और भेदज्ञान तक पहुँचे ही न हो वे क्या करें? उन्हें किस कामका? इसमें कोई परिभ्रमणकी ऐसी चर्चा नहीं है। चौथी गाथाकी

(शेष पृष्ठ संख्या १८ पर..)

REGISTERED NO. : BVHO - 253 / 2024-2026
RENEWED UPTO : 31/12/2026
R.N.I. NO. : 70640/97
Published : 10th of Every month at BHAV.
Posted at 10th of Every month at BHAV. RMS
Total Page : 20

'सत्पुरुषों का योगबल जगत का कल्याण करे'

... दर्शनीय स्थल...

श्री शशीप्रभु साधना स्मृति मंदिर
भावनगर

स्वत्वाधिकारी श्री सत्श्रुत प्रभावना ट्रस्ट की ओर से मुद्रक तथा प्रकाशक श्री राजेन्द्र जैन द्वारा अजय ऑफसेट, १२-सी, बंसीधर मिल कम्पाउन्ड, बारडोलपुरा, अहमदाबाद-३८० ००४ से मुद्रित एवम् ५८० जूनी माणिकवाडी, पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी मार्ग, भावनगर-३६४ ००१ से प्रकाशित
सम्पादक : श्री राजेन्द्र जैन -09825155066

Printed Edition : **3730**
Visit us at : http://www.satshrut.org

If undelivered please return to ...
Shri Shashiprabhu Sadhana Smruti Mandir
1942/B, Shashiprabhu Marg, Rupani,
Bhavnagar - 364 001

M 9374825041